

कबीरदास एवं ईसरदास के भक्ति काव्य में नाम-साधना एवं नाम-महिमा : एक तुलनात्मक अध्ययन

आसुसिंह

शोधार्थी & सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, राजकीय महाविद्यालय, बाड़मेर, राजस्थान, गुजरात यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद, गुजरात, भारत

DOI: <https://doi.org/10.66856/ijhr.2026.12.4.12245>

सारांश

मध्यकालीन भारतीय भक्ति-काव्य में 'नाम' साधना, भक्ति एवं आध्यात्मिक अनुभूति का अत्यंत महत्वपूर्ण आधार रहा है। भक्त कवियों ने नाम को केवल ईश्वर के संबोधन के रूप में स्वीकार नहीं किया, बल्कि उसे आत्मशुद्धि, ईश्वर-स्मरण, प्रेम, ज्ञान, वैराग्य और मोक्ष का सहज साधन माना है। कबीरदास और ईसरदास दोनों के काव्य में नाम-साधना की केंद्रीय भूमिका दृष्टिगत होती है, यद्यपि दोनों कवियों की दार्शनिक पृष्ठभूमि एवं काव्याभिव्यक्ति में पर्याप्त भिन्नता है।

कबीरदास की 'सुमिरण कौ अंग' संबंधी साखियों में राम-नाम को 'ततसार', 'निज सार' और समस्त साधना का सार कहा गया है। वे मनसा, वाचा और कर्मणा नाम-स्मरण पर बल देते हैं। उनके लिए नाम-साधना बाह्य कर्मकांड की अपेक्षा अंतःकरण की शुद्धि, आत्मबोध और परम सत्ता के अनुभव का माध्यम है। दूसरी ओर ईसरदास के हरिरस में नाम-महिमा का अत्यंत व्यापक और भक्तिपरक विवेचन मिलता है। हरिरस में नाम को वेद-शास्त्र-पुराण का सार, तीर्थ-व्रत-जप-तप से श्रेष्ठ, पाप-विनाशक, भवसागर से पार लगाने वाला और मोक्षदायक बताया गया है।

प्रस्तुत शोध में दोनों कवियों के नाम-संबंधी विचारों का अध्ययन नाम को तत्त्व-सार, नाम-स्मरण, भक्ति, प्रेम, चित्त की एकाग्रता, पाप-विनाश, मोह-निवारण, मृत्यु-बोध, मुक्ति, पौराणिक संदर्भ और ईश्वर के विविध नाम-रूपों के आधार पर किया गया है। अंत में दोनों कवियों की नाम-साधना के साम्य एवं वैषम्य का स्वतंत्र तुलनात्मक विवेचन प्रस्तुत किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि दोनों कवियों के लिए नाम साधना का केंद्रीय तत्व है, किंतु कबीर के यहाँ नाम अधिक अंतर्मुखी, अनुभवप्रधान और निर्गुण-ब्रह्म की अनुभूति से संबद्ध है, जबकि ईसरदास के यहाँ नाम विष्णु-भक्ति, पौराणिक आख्यान और सगुण भक्तिपरंपरा के साथ अधिक विस्तार प्राप्त करता है।

मूल शब्द: कबीरदास, ईसरदास, नाम-साधना, नाम-महिमा, सुमिरण, राम-नाम, हरिरस, भक्ति, मोक्ष, तुलनात्मक अध्ययन

भारतीय आध्यात्मिक परंपरा में 'नाम' का महत्त्व अत्यंत प्राचीन है। ईश्वर के स्मरण, स्तुति और उपासना के विभिन्न रूपों में नाम-स्मरण को सहज एवं सर्वसुलभ साधन के रूप में स्वीकार किया गया है। मध्यकालीन भक्ति आंदोलन ने इस साधन को विशेष व्यापकता प्रदान की। भक्ति कवियों ने धर्म और अध्यात्म को जटिल कर्मकांडों से निकालकर सामान्य मनुष्य के निकट पहुँचाने का महती प्रयास किया।

कबीरदास निर्गुण संत परंपरा के प्रमुख कवि हैं। उनके लिए 'राम' किसी एक ऐतिहासिक या पौराणिक व्यक्तित्व तक सीमित नहीं है। राम-नाम व्यापक परम सत्ता का संकेतक है। 'सुमिरण कौ अंग' में वे स्पष्ट कहते हैं—

"कबीर कहै मैं कथि गया, कथि गया ब्रह्म महेश।

राम नाँव ततसार है, सब काहू उपदेस॥"

अर्थात् राम-नाम ही तत्त्व का सार है और यही सबके लिए उपदेश है। इसी क्रम में वे नाम को तीनों लोकों में 'निज सार' कहते हैं।

ईसरदास के हरिरस में भी नाम-महिमा व्यापक रूप में व्यक्त हुई है। वे कहते हैं

"अहले ही हरि नाम, जाण अजाण जपीजै जीहां।

सास्त्र वेद पुराण, सर्व महीं तत अखर सार॥"

यहाँ हरि-नाम को वेद, शास्त्र और पुराणों के सार के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। इस प्रकार दोनों कवियों के यहाँ नाम साधना का महत्वपूर्ण आधार है।

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य दोनों कवियों के नाम-विषयक चिंतन को अलग-अलग समझने के बाद उसका तुलनात्मक विवेचन करना है।

शोध की समस्या

कबीरदास और ईसरदास दोनों ही नाम-साधना को महत्वपूर्ण मानते हैं, परंतु उनके नाम-दर्शन की प्रकृति एक जैसी नहीं है। कबीर का राम-नाम निर्गुण ब्रह्म, आत्मानुभूति और आंतरिक साधना से जुड़ा है, जबकि ईसरदास राम, नारायण, कृष्ण, गोविंद, वासुदेव, पुरुषोत्तम आदि विविध नामों के माध्यम से विष्णु-भक्ति की व्यापक परंपरा को व्यक्त करते हैं।

अतः मुख्य समस्या यह है कि दोनों कवियों के नाम-संबंधी चिंतन का वास्तविक स्वरूप क्या है और उनके बीच कौन-कौन से दार्शनिक, भक्तिपरक तथा काव्यगत साम्य एवं वैषम्य स्थापित किए जा सकते हैं।

शोध के उद्देश्य

1. कबीरदास एवं ईसरदास के नाम-संबंधी विचारों का अध्ययन करना।
2. नाम-साधना के स्वरूप को स्पष्ट करना।
3. नाम और भक्ति के संबंध का विवेचन करना।
4. नाम-स्मरण तथा आत्मशुद्धि के संबंध को समझना।
5. नाम और मोक्ष की अवधारणा का अध्ययन करना।
6. नाम-महिमा में प्रयुक्त पौराणिक संदर्भों का अध्ययन करना।
7. दोनों कवियों की नाम-साधना के साम्य एवं वैषम्य को स्पष्ट करना।
8. नाम-साधना के काव्यगत एवं लोकमंगलकारी महत्त्व को रेखांकित करना।

कबीरदास एवं ईसरदास के काव्य में नाम-साधना

नाम को तत्त्व-सार मानना

कबीर की नाम-साधना का मूल आधार यह विश्वास है कि राम-नाम समस्त आध्यात्मिक साधना का सार है। वे कहते हैं—

“राम नाँव ततसार है, सब काहू उपदेस॥”

दूसरी साखी में वे इसे और स्पष्ट करते हैं

“तत तिलक तिहूँ लोक मैं, राम नाँव निज सार।”

यहाँ ‘ततसार’ और ‘निज सार’ दोनों पद नाम की सर्वोच्चता को अभिव्यक्त करते हैं। कबीर के लिए नाम केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि वह आध्यात्मिक तत्त्व है जिसके माध्यम से साधक परम सत्य की ओर अग्रसर होता है। वहीं ईसरदास भी हरि-नाम को समस्त शास्त्रीय ज्ञान का सार बताते हैं

“अहले ही हरि नाम, जाण अजाण जपीजै जीहां।
सास्त्र वेद पुराण, सर्व महीं तत अखर सारं।”

इस कथन में नाम की सार्वभौमिकता स्पष्ट है। नाम ज्ञानी और अज्ञानी दोनों के लिए समान रूप से उपयोगी है। ईसरदास नाम को वेद, शास्त्र और पुराणों के सार के रूप में स्थापित करते हैं।

नाम और भक्ति

कबीर नाम और भक्ति को एक-दूसरे से अभिन्न मानते हुए कहते हैं कि

“भगति भजन हरि नाँव है, दूजा दुख अपार।
मनसा बाचा क्रमनां, कबीर सुमिरण सार॥”

कबीर के अनुसार हरि-नाम का स्मरण ही भक्ति का सार है। यहाँ नाम-साधना केवल जिह्वा के उच्चारण तक सीमित नहीं है। मन, वाणी और कर्मकृतीनों स्तरों पर ईश्वर का स्मरण अपेक्षित है। वहीं ईसरदास नाम को प्रेमपूर्ण भक्ति के साथ जोड़ते हैं

“नारायण रा नाम सूँ, प्राणी कर लै प्रीत।”

अर्थात् नारायण के नाम से प्रेम करो। यहाँ नाम और प्रेम का समन्वय है। ईसरदास के लिए नाम का उच्चारण तभी सार्थक है जब वह भक्त के हृदय में ईश्वर के प्रति अनुराग उत्पन्न करे।

नाम-स्मरण की प्रधानता

कबीर के अनुसार

“कबीर सुमिरण सार है, और सकल जंजाल।”

यहाँ ‘सुमिरण’ समस्त साधना का सार है। नाम-स्मरण के अतिरिक्त सांसारिक आसक्ति और साधना के बाहरी रूप कबीर की दृष्टि में गौण हो जाते हैं। उपलब्ध पाठ में इसी साखी के संदर्भ में नाम-जप को साधना का सार बताया गया है। वहीं ईसरदास कहते हैं कि

“राम नाम रटता रहो, आहूँ पहर अखंड।
सुमरण सम सौदा नहीं, नर देखो नखंड।”

यहाँ आठों पहर निरंतर नाम-स्मरण का आग्रह है। ईसरदास के अनुसार नाम-स्मरण संसार के किसी भी लाभ से श्रेष्ठ आध्यात्मिक ‘सौदा’ है।

नाम और चित्त की एकाग्रता

कबीर के नाम-स्मरण का अंतिम उद्देश्य केवल नाम का उच्चारण नहीं, बल्कि मन का राम में लीन होना है। ‘सुमिरण कौ अंग’ में

नाम-स्मरण की परिणति राम-रत्न की प्राप्ति और आवागमन से निवृत्ति की अनुभूति में दिखाई देती है। कबीर के लिए नाम-स्मरण साधक के मन को बाह्य विषयों से हटाकर परम सत्ता की ओर केंद्रित करता है। ईसरदास राम नाम को मुख में धारण करने का आग्रह करते हुए कहते हैं कि

“चत्रभुज चरणां धार चित, अकळ अजोणी आख।
गोकळ गिरधर ग्यान ग्रहि, राम नाम मुख राख।”

यहाँ चित्त को भगवान के चरणों में स्थिर करने और मुख में राम-नाम रखने की बात है। इससे स्पष्ट होता है कि ईसरदास नाम-स्मरण को मन और वाणी दोनों से जोड़ते हैं।

नाम और प्रेम

कबीर के लिए नाम और प्रेम का संबंध अत्यंत गहरा है

“जिहि घटि प्रीति न प्रेम रस, फुर्न रसना नहिं राम।

ते नर इस संसार में, उपजि पये बेकाम॥”

नाम तभी सार्थक है जब हृदय में प्रेम हो। केवल यांत्रिक उच्चारण से आध्यात्मिक उपलब्धि संभव नहीं। इसी प्रकार नारायण नाम से प्रीत का आह्वान करते हुए ईसरदास का कथन है कि

“नारायण रा नाम सूँ, प्राणी कर लै प्रीत।”

नाम के प्रति प्रेम ही भक्त को भगवान से जोड़ता है। इस प्रकार ईसरदास के यहाँ नाम-साधना प्रेम-भक्ति में विकसित होती है।

नाम और मोह-भ्रम से मुक्ति

कबीर संसार की अज्ञान-निद्रा से जागने का संदेश देते हैं। वे कहते हैं

“कबीर निरभै रामजपि, जय लग दीवै वाति।
तेल घट्या बाती बुझी, ... सोवेगा दिन राति॥”

अर्थात् जीवनरूपी दीपक के बुझने से पहले नाम-स्मरण कर लेना चाहिए। नाम मनुष्य को अज्ञान और सांसारिक मोह से जागृत करता है।

इसी प्रकार ईसरदास नाम-स्मरण को भ्रम, मद और ममता से मुक्ति से जोड़ते हैं

“प्रगट्ट ग्यान तोरो ज्यां प्रम भगै मद मम्मट छूटत भ्रम
अखंतां नाम टकै दुख ओघ उपज्जत आणंद चित्त अमोघ”

अर्थात् नाम और ज्ञान के प्रभाव से भ्रम, अहंकार और ममता का क्षय होता है तथा चित्त में आनंद उत्पन्न की उत्पत्ति होती है।

नाम और पाप-विकारों का क्षय

कबीर नाम-विहीन जीवन को निष्फल मानते हैं और नाम को दुष्कर्मों के क्षय का प्रभावी माध्यम बताते हैं। वे कहते हैं

“कोटि करम पेलै पलक मै, जे रचक आवै नाउँ।
अनेक जुग जे पुण्य करै, नहीं राम बिन ठाउँ॥”

यहाँ राम-नाम की क्षणमात्र स्मृति को भी अत्यंत प्रभावशाली बताया गया है। ईसरदास का कथन और भी स्पष्ट है

“नाम समोवड़ को नहीं, जप तप तीरथ जोग ।
नामे पातक नासही, नामे नासै रोग ।”

इन्होंने नाम को जप, तप, तीर्थ और योग से श्रेष्ठ बताते हुए उसे पाप और रोग के नाश का साधन स्वीकार किया है

नाम और मोक्ष

कबीर की नाम—साधना आत्मबोध और परमात्मानुभूति की ओर ले जाती है। नाम—स्मरण के माध्यम से ‘मैं’ की अहंभावना समाप्त होती है और साधक परम सत्ता से एकात्म अनुभव करता है। इसी अर्थ में नाम मुक्ति का साधन है।
ईसरदास स्पष्ट कहते हैं—

“खुधा न भाजे पाणियां, त्रिखा न छीजे अन्न ।
मुगत नहीं हरि नाम विण, मानव साचे मन्न ।”

भूख पानी से और तृषा अन्न से नहीं मिटती। इसी प्रकार हे मानव! यह सच समझ कि हरि के नाम सुमिरण बिना मुक्ति नहीं अर्थात् हरि—नाम के बिना मुक्ति संभव नहीं। उनके द्वारा नाम को जित्वा में धारण करने से यम के भय से मुक्ति की बात कही गई है। इनके अनुसार नाम में रत रहने से आवागमन के संशय के मुक्ति प्राप्त की जा सकती है।

नाम और मृत्यु—बोध

कबीर जीवन की क्षणभंगुरता को नाम—साधना का आधार बताते हैं, वे कहते हैं कि

“लुटि सकै तौ लूटियौ, राम नाम है लूटि ।
पीछैं ही पछिताहुगे, यहु तन जेह छूटि ॥”

अर्थात् जीवन समाप्त होने के बाद नाम—स्मरण का अवसर नहीं रहेगा। अतः वर्तमान जीवन में ही नाम की साधना करनी चाहिए। इसी प्रकार ईसरदास कहते हैं

“नारायण रा नाम री, मोड़ी पड़ी पिछांण ।
कई दिन बाळापण गया, कई दिन गया अजांण ।”

अर्थात् मनुष्य का बहुत—सा जीवन बाल्यावस्था और अज्ञान में बीत जाता है। इसलिए शेष जीवन को नाम—स्मरण में लगाना आवश्यक है।

नाम की निरंतरता

कबीर नाम को जीवन की सतत साधना बताते हैं

“कबीर राम ध्याइ लै, जिभ्या सौं करि मंत ।
हरि सागर जिनि बीसरे, छीलर देखी अनंत ॥”

यहाँ राम—नाम को जित्वा पर धारण करने और हरि—सागर को न भूलने की प्रेरणा है।
इसी प्रकार ईसरदास का आग्रह है

“तवै हरि नाम अहोनिस् तम्म जरा त्यां काळ न व्यापत जम्म
भजै तव नाम टळे मन भ्रम्म कथै तव नाम कटै सब क्रम्म ।”

प्रभो ! आपके श्री हरि नाम को जो अहर्निश लेते रहते हैं उन्हें, वृद्धावस्था, मृत्यु और यम की यातना नहीं व्यापती। आपका नाम जपने से भ्रम की निवृत्ति होती है और आपका गुणानुवाद गाने से पाप कर्मों का नाश हो जाता है इस प्रकार नाम—स्मरण उनके लिए अहर्निश चलने वाली साधना है।

नाम और पौराणिक संदर्भ

कबीर के नाम—विवेचन में पौराणिक संकेत मिलते हैं, किंतु नाम—महिमा की स्थापना मुख्यतः उनके अनुभव, उपदेश और आध्यात्मिक दृष्टि से होती है। ‘ब्रह्म महेस’ का उल्लेख करते हुए भी वे अंततः राम—नाम को ‘ततसार’ घोषित करते हैं। जबकि ईसरदास नाम की शक्ति को पौराणिक कथाओं के माध्यम से प्रमाणित करते हैं।
विभीषण के संबंध में

“दाखै ईसरदास यँ कटक न होणा कीध ।
राम राम रटतां थकां, लंक बभीखण लीध ।”

ईश्वरदास कहते हैं कि राम के नाम का प्रभाव तो देखिये। विभीषण ने राम का नाम रटते हुए बिना सेना की सहायता के (युद्ध किये बिना ही) लंका का राज्य प्राप्त कर लिया अजामिल के संबंध में

“अजामेळ जम—दळ अगां, विछुटो विखमी वार ।
करते नारायण कह्यो, पुत्र हेत पोकार ।”

नारायण नाम के अपने पुत्र को अंत समय में पुकारने के कारण अजामिल यमदूतों के दल से मुक्त हो गया। इसी प्रकार ध्रुव, हनुमान और अन्य भक्तों के उदाहरणों से नाम—प्रताप को पुष्ट किया गया है।

ईश्वर के विविध नाम—रूप

कबीर के काव्य में ‘राम’ नाम केंद्रीय है, लेकिन उसका अर्थ संकीर्ण रूप से केवल दशरथ—पुत्र राम तक सीमित नहीं है। नाम व्यापक परम सत्ता की ओर संकेत करता है। इसलिए कबीर का राम—नाम निर्गुण ब्रह्म की अनुभूति से जुड़ा हुआ है। जबकि ईसरदास के यहाँ नाम—बहुलता अत्यंत उल्लेखनीय है

“राम क्रिसन नारायणा, सचिदानंद गोविंद ।
वासुदेव वीटळ विभु, नरहर गोकुळ नंद ।”

इसी प्रकार वे कहते हैं

“पुरुषोत्तम पूरण प्रभू, राघव गिरधर रूप ।
मुरलीधर मोहन मुकन, भज ले त्रिभुवन भूप ।”

इसी प्रकार इनके काव्य में त्रिविक्रम, पुरुषोत्तम, हरि, वामन, हयग्रीव, राम, परशुराम, माधव, सालिग्राम, नारायण, कृष्ण आदि अनेक नामों का स्मरण मिलता है। इससे ईसरदास की विष्णु—केंद्रित व्यापक नाम—परंपरा स्पष्ट होती है।

कबीरदास एवं ईसरदास की नाम—साधना रु तुलनात्मक विश्लेषण

नाम की सर्वोच्चता

दोनों कवि नाम को साधना का सर्वोच्च तत्व मानते हैं। कबीर के लिए राम—नाम ‘ततसार’ है, जबकि ईसरदास के लिए नाम की तुलना किसी अन्य साधना से नहीं की जा सकती

“नाम समोवड़ को नहीं, जप तप तीरथ जोग ।”

अतः नाम की सर्वोच्चता दोनों की साझा मान्यता है।

नाम और भक्ति

कबीर के अनुसार

“भगति भजन हरि नाँव है...”

और ईसरदास के यहाँ

“नारायण रा नाम सूँ प्राणी कर लै प्रीत।”

दोनों नाम को भक्ति का आधार मानते हैं। अंतर यह है कि कबीर नाम को अंतःकरण की साधना से अधिक जोड़ते हैं, जबकि ईसरदास नाम को भगवान के प्रति प्रेमपूर्ण सगुण भक्ति के साथ प्रस्तुत करते हैं।

नाम और साधना—पद्धति

कबीर का प्रमुख आग्रह ‘सुमिरण’ पर है। वे मनसा—वाचा—कर्मणा नाम—स्मरण की बात करते हैं। ईसरदास जप, रटन, स्मरण, स्तुति और नाम—प्रेम के विविध रूपों को स्वीकार करते हैं। इस प्रकार कबीर की साधना अधिक अंतर्मुखी और अनुभवप्रधान है, जबकि ईसरदास की साधना में भक्तिपरक विविधता अधिक है।

नाम और प्रेम

दोनों कवियों के यहाँ प्रेम के बिना नाम—साधना अधूरी है। कबीर नाम के साथ ‘प्रीति’ और ‘प्रेम रस’ की आवश्यकता बताते हैं। ईसरदास सीधे नारायण—नाम से प्रीति करने का उपदेश देते हैं।

नाम और आत्मबोध

कबीर के अनुसार नाम—साधना का एक प्रमुख परिणाम आत्मबोध है। नाम के माध्यम से साधक अपने अहंकार एवं पूर्वाग्रह से ऊपर उठता है।

ईसरदास के यहाँ भी नाम ज्ञान और भ्रम—निवारण का साधन है, किंतु उनकी अभिव्यक्ति में भक्ति और भगवान की कृपा का पक्ष अधिक प्रमुख है।

नाम और माया—मोह

कबीर संसार को माया और काल के प्रभाव से युक्त मानते हुए नाम—स्मरण के माध्यम से उससे जागने की प्रेरणा देते हैं। ईसरदास नाम को भ्रम, मद, ममता और तृष्णा के निवारण से जोड़ते हैं।

अर्थात् लक्ष्य दोनों का समान है—सांसारिक आसक्ति से निवृत्ति परंतु उसकी अभिव्यक्ति का स्वरूप भिन्न भिन्न है।

नाम और पाप—विनाश

दोनों नाम को पाप—विनाशक मानते हैं। ईसरदास इस विचार को अधिक स्पष्ट शब्दों में कहते हैं

“नामै पातक नासही, नामै नासै रोग।”

कबीर भी नाम की क्षणमात्र स्मृति को दुष्कर्मों के विनाश में समर्थ मानते हैं।

नाम और मोक्ष

दोनों के लिए नाम मुक्ति का साधन है। किंतु कबीर का मोक्ष आत्मानुभूति और अहं—विलय से जुड़ा है, जबकि ईसरदास के यहाँ यम—भय, जन्म—मरण और भवसागर से मुक्ति की भक्तिपरक अवधारणा अधिक स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है।

नाम और मृत्यु—बोध

कबीर ‘राम नाम की लूट’ तथा बुझते दीपक के रूपक से मृत्यु की अनिवार्यता का बोध कराते हैं। ईसरदास भी मनुष्य को चेताते हैं कि जीवन का अधिकांश भाग अज्ञान में बीत जाता है; इसलिए शेष समय नाम—स्मरण में लगाना चाहिए।

दोनों की चेतना में मृत्यु भय का विषय मात्र नहीं, बल्कि साधना के लिए जागरण का माध्यम है।

नाम की निरंतरता

कबीर के यहाँ सुमिरण सतत मानसिक साधना है। ईसरदास ‘अहोनिश’ और ‘आहूँ पहर अखंड’ नाम—जप की बात करते हैं। दोनों कवियों के लिए नाम अवसर विशेष की पूजा नहीं, बल्कि जीवन—पद्धति है।

पौराणिकता

यहाँ दोनों के बीच स्पष्ट अंतर दिखाई देता है। कबीर पौराणिक संदर्भों का उपयोग करते हुए भी अपनी आध्यात्मिक अनुभूति को प्रमुखता देते हैं। ईसरदास नाम—महिमा की पुष्टि के लिए अजामिल, विभीषण, ध्रुव, हनुमान आदि पौराणिक पात्रों को विस्तृत रूप से प्रस्तुत करते हैं।

निर्गुण और सगुण अभिव्यक्ति

कबीर की नाम—साधना मूलतः निर्गुण ब्रह्म की अनुभूति से संबद्ध है। उनका ‘राम’ व्यापक परम सत्ता का प्रतीक है।

ईसरदास के यहाँ नाम राम, कृष्ण, नारायण, गोविंद, वासुदेव, पुरुषोत्तम, गिरधर आदि सगुण एवं अवतारी रूपों से जुड़ा है।

नाम—साधना का लोकमंगलकारी पक्ष

कबीर और ईसरदास की नाम—साधना केवल व्यक्तिगत मोक्ष तक सीमित नहीं है। दोनों कवि नाम को सामान्य मनुष्य के लिए सुलभ बनाते हैं। कबीर का नाम—स्मरण किसी विशेष जाति, वर्ग या विद्वत्ता का अधिकार नहीं है। वे मनसा—वाचा—कर्मणा नाम—स्मरण की बात करते हुए साधना को जीवन के प्रत्येक स्तर से जोड़ते हैं।

ईसरदास भी कहते हैं

“अहले ही हरि नाम, जाण अजाण जपीजै जीहां।”

यहाँ ज्ञानी—अज्ञानी दोनों के लिए नाम की समान उपयोगिता व्यक्त होती है। इस दृष्टि से नाम—साधना सामाजिक और आध्यात्मिक दोनों स्तरों पर लोकमंगलकारी बन जाती है।

नाम मनुष्य को संयम, प्रेम, भक्ति, आत्मचिंतन और नैतिक जीवन की ओर प्रेरित करता है। इस कारण दोनों कवियों की नाम—साधना केवल धार्मिक साधना न रहकर जीवन—मूल्यों की साधना भी बन जाती है।

निष्कर्ष

कबीरदास एवं ईसरदास दोनों के भक्ति—काव्य में नाम—साधना केंद्रीय आध्यात्मिक तत्त्व के रूप में प्रतिष्ठित है। दोनों कवि इस बात पर बल देते हैं कि मनुष्य को बाह्य संसार की क्षणभंगुरता और मोह में फँसे रहने के बजाय ईश्वर के नाम का स्मरण करना चाहिए।

कबीर के लिए “राम नाँव ततसार” है। वे नाम को भक्ति, सुमिरण, आत्मबोध और मुक्ति का आधार बनाते हैं। उनके यहाँ नाम—साधना का अंतिम लक्ष्य मनुष्य की चेतना का रूपांतरण है। नाम—स्मरण से मन संसार के जंजाल से हटकर परम सत्ता की ओर उन्मुख होता है। उनके नाम—दर्शन में निर्गुण ब्रह्म, आत्मानुभूति, प्रेम और माया से निवृत्ति का गहरा संबंध दिखाई देता है।

ईसरदास के हरिरस में नाम—महिमा का व्यापक भक्तिपरक रूप मिलता है। इनके काव्य में नाम को वेद, शास्त्र और पुराणों का सार कहते हुए इसे जप, तप, तीर्थ और योग से श्रेष्ठ बताया गया है। अजामिल, विभीषण, ध्रुव और हनुमान आदि के उदाहरणों द्वारा नाम की शक्ति को प्रमाणित किया गया है। राम,

कृष्ण, नारायण, गोविंद, वासुदेव, पुरुषोत्तम आदि अनेक नामों का स्मरण ईश्वर की व्यापक सत्ता को व्यक्त करता है।

इस प्रकार दोनों कवियों की नाम-साधना में मूलभूत समानता यह है कि नाम उनके लिए केवल उच्चारण नहीं, बल्कि आध्यात्मिक जीवन का आधार है। नाम भक्ति का साधन है, मन की शुद्धि का माध्यम है, सांसारिक मोह से निवृत्ति का मार्ग है और अंततः मुक्ति की ओर ले जाने वाली साधना है।

वहीं मुख्यतः उनके दार्शनिक और भक्तिपरक दृष्टिकोण में विभेद भी है। कबीर का नाम-दर्शन अधिक निर्गुण, अंतर्मुखी, अनुभवप्रधान और आत्मबोधपरक है। ईसरदास का नाम-दर्शन अधिक सगुण-भक्तिपरक, विष्णु-केंद्रित, पौराणिक और आख्यानात्मक है। कबीर नाम की आध्यात्मिक अनुभूति को केंद्र में रखते हैं, जबकि ईसरदास नाम की महिमा को भगवान के विविध रूपों, पौराणिक चरित्रों और भक्तिपरक आख्यानों के माध्यम से विस्तार देते हैं।

अतः यह कहा जा सकता है कि कबीर और ईसरदास दोनों की नाम-साधना भारतीय भक्ति परंपरा की दो महत्वपूर्ण धाराओं को अभिव्यक्त करती है। एक ओर कबीर नाम को अंतःचेतना और आत्मबोध का माध्यम बनाते हैं, दूसरी ओर ईसरदास नाम को भक्तिभाव, ईश्वर-कृपा और मोक्ष की व्यापक साधना के रूप में प्रतिष्ठित करते हैं। दोनों को साथ रखकर तुलना करने पर यह तथ्य स्पष्ट होता है कि मध्यकालीन भक्ति-काव्य में 'नाम' साधना का साधन मात्र नहीं, बल्कि भक्त और परम सत्ता के मध्य जीवंत संबंध स्थापित करने वाला आध्यात्मिक सेतु है।

संदर्भ ग्रंथ-सूची

1. कबीरदास — कबीर ग्रंथावली, संपादक डॉ. श्यामसुन्दरदास, नागरीप्रचारिणी सभा, काशी, 'सुमिरण कौ अंग', साखी 2, 3, 4, 5, 10, 17, 20, 25, 30 आदि।
2. ईसरदास — हरिरस, सं. आचार्य बदरीप्रसाद साकरिया, नाम-महिमा संबंधी पद 195-233।
3. हजारीप्रसाद द्विवेदी— कबीर।
4. रामचंद्र शुक्ल — हिंदी साहित्य का इतिहास।
5. बलदेव उपाध्याय — हिंदी साहित्य का इतिहास।
6. हजारीप्रसाद द्विवेदी— हिंदी साहित्य की भूमिका।